संवाद

जैसे ही बच्चे गर्मियों की छुट्टियों से स्कूल वापस आते हैं, वे ऊर्जा से भरे होते हैं। अलग-अलग किस्से कहानियों के साथ यह बताने के लिए कि उनकी छुट्टियाँ कैसी बीतीं। बच्चे अपने दोस्तों से मिलकर और स्कूल वापस आकर प्रसन्न होते हैं। बच्चे उमंग के साथ अपने शिक्षकों और दोस्तों से प्रतिदिन कुछ नया सीखते हैं। हर दिन वो नए अवलोकन, घटनाओं का सामना करते हैं जो उनकी सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा बन जाते हैं, क्योंकि बच्चे पर्यावरण और समाजीकरण के साथ सबसे अच्छा सीखते हैं। स्कूल में ऐसा माहौल तैयार किया जाना चाहिए जिससे बच्चे सीखने की प्रक्रिया और ज्ञान अर्जित करने में आनंद का अनुभव कर सकें जिससे उन्हें शिक्षा एक बाधा या कठिन कार्य न लगे।

शिक्षा का मतलब केवल पढ़ना, लिखना और ज्ञान प्राप्त करना नहीं है, बल्कि यह हमें जीवन जीना सिखाती है। सच्ची शिक्षा, नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण के साथ शारीरिक गतिविधियों के प्रभावी उपयोग से प्राप्त होती है। नेक विचार, व्यवहार और ऊर्जा से बच्चे वह हासिल कर सकते हैं जिसकी वे आकांक्षा रखते हैं। बच्चों के व्यवहार को बेहतर चरित्र और मूल्यों के साथ विकसित किया जाना चाहिए। मूल्य ऐसे होने चाहिए जो बच्चों में मानवता की भावना पैदा करें। सार्थक शिक्षा उपयोगी, रोचक, रचनात्मक और कौशल आधारित होनी चाहिए जिसे बच्चे अत्यधिक रुचि के साथ सीख सकें। खेल-खेल में सीखने से शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास में मदद मिलती है जिससे जिज्ञासा और कल्पनाशीलता का विकास होता है। मातृभाषा में सीखना बेहतर समझ के लिए एक प्रभावी तरीका है, बच्चों को शिक्षा का आनंद लेना चाहिए जो मातृभाषा में ज्ञान को आत्मसात करने से संभव होगा। जिससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ेगा, क्योंकि प्रत्येक ज्ञान भाषा पर निर्भर होता है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए उनकी रुचि के आधार पर विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को निखारने पर समान ज़ोर देने की ज़रूरत है। सही माहौल, संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षकों की क्षमता से पढ़ाई बेहतर होती है। बच्चे शिक्षकों के माध्यम से ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों को अर्जित करते हैं। बच्चों में शिक्षकों को बेहतर सहनशीलता, ईमानदारी, सहानुभूति के साथ

समानता जैसी सकारात्मक सीखने की आदतें विकसित करने की आवश्यकता है। शिक्षक को शिक्षा ढाँचे के आधार पर बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप ढलने की ज़रूरत है।

सभी बच्चे स्कूल जाएँ और वहाँ उन्हें उचित शिक्षा मिले इस उद्देश्य से भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की है। खेल-खेल में बच्चों को भाषा, गणित और पर्यावरण की जानकारी मिले साथ ही वे सीख रहे हैं या नहीं इसकी जाँच भी की जाए, ताकि बच्चों के सीखने से संबंधित कमियों को समय पर दूर किया जा सके। विद्यार्थियों के समग्र विकास के आंकलन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 'परख' की स्थापना की गई है। दिल्ली सरकार ने भी अपने स्कूलों में बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास के लिए हैप्पीनेस पाठ्यक्रम आयोजित किया है, ताकि बच्चे खुशी के साथ पढ़ लिख कर आगे बढ़ें और देश के सुदृढ़ नागरिक बनें।

प्रस्तुत अंक में लेख इन्हीं मुद्दों पर शामिल किए गए है। 'विशेष' के अंतर्गत कक्षा 1 के लिए जो नई पुस्तक आई है *सारंगी* उसके बारे में दिया गया है। आशा है कि यह अंक आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। पत्रिका के संबंध में आपके विचार व सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

अकादमिक संपादक